सभेई संसारु, माया कयो वसि पांहिंजे,
खाली छड्डियाईं कोन को, जुवानु बिरिधु ऐं ब्रारु,
विझी ज़ारु भरम जो, कियाई खलक खुवारु,
को सामी पुरुखु सचारु, जागी छुटे जिन खों.

माया की करनी और प्रभाव का वर्णन करते हुए सामीजी कहते हैं कि माया ने सारे संसार को अपने वश में कर लिया है। माया ने किसी को नहीं छोड़ा है- न वृद्ध को, न जवान को और न ही किसी बालक को। अर्थात् वह सबको अपने फाँस में बाँधे हुए है अपना भ्रम-जाल बिछाकर उसने सभी मनुष्यों को पकड़ कर दुखी कर लिया है। संसार में कोई विरला सत्पुरुष होगा, जो जाग्रत होकर माया से अपना पिंड छुड़ा सकेगा।

माया क्या है? ईश्वर के आज्ञानुसार कार्य करने वाली शक्ति का नाम 'माया' है। माया के अनेक नाम हैं। जैसे अविद्या, अज्ञान, प्रकृति, प्रधान शक्ति आदि। ब्रह्मविद्या/ अध्यात्मज्ञान द्वारा माया का नाश होता है, इसलिए माया को 'अविद्या' कहते हैं। माया ब्रह्म के स्वरूप को ढँक लेती है और ब्रह्म का ज्ञान करने नहीं देती, इस कारण माया को 'अज्ञान' नाम दिया गया है। जगत् का कारण होने के कारण माया 'प्रकृति' है। सभी कार्य अपने में विलीन कर प्रलय के समय माया के उदासीन रूप को तथा उस समय सत्व, रज और तम-इन तीनों गुणों की साम्य-अवस्था को 'प्रधान' कहा जाता है। माया कभी स्वतंत्र नहीं रहती, वह चैतन्य/ब्रह्म के आश्रय में रहने वाली होती है। इसलिए माया को 'शक्ति' कहा जाता है। माया अति प्रभावशाली एवं शक्तिशाली होती है। माया के कारण ही यह स्थूल एवं सूक्ष्म सृष्टि ब्रह्म पर आश्रित होने का आभास होता है। माया ऐसे जगत् का अनुभव कराती है, जो वास्तव में है ही नहीं। माया के कारण जीव को अपने मूल स्वरूप का ज्ञान नहीं हो पाता। माया का आभास तो होता है, पर वह दिखाई नहीं देती। माया न होकर भी प्रतीत/महसूस होती है। माया निर्गुण ब्रह्म में निर्गुणता से रहती है। जब वह विश्वरूप में प्रकट होती है, तब इसे 'कार्य-रूपिणी माया' कहते हैं। माया ब्रह्म के अधीन होती है। माया का निर्माण और नाश ब्रह्म का सहज स्वभाव है। यह माया मनुष्यों के लिए 'अज्ञान' बन जाती है। यह अज्ञान 'आत्मज्ञान' द्वारा ही नष्ट किया जा सकता है। सतगुरु की कृपा से कोई सच्चा साधक आत्मज्ञान प्राप्त कर माया के महाजाल से मुक्त हो सकता है।

■